आलू कहाँ से आते हैं?

मिलिसेंट सेल्सम

आलू कहाँ से आते हैं?

मिलिसेंट सेल्सम

सूज़न ने अपनी मां को
आलू छीलते हुए देखा.
"आप आज रात आलू का
क्या बना रही हैं?" उसने पूछा.
"मैं आलू की कोई भी डिश
नहीं बना रही हूँ, सूज़न.
मेरे पास एक भी आलू नहीं बचा है.
क्या तुम मेरे लिए कुछ आलू खरीद
कर ला सकती हो?" माँ से पूछा.
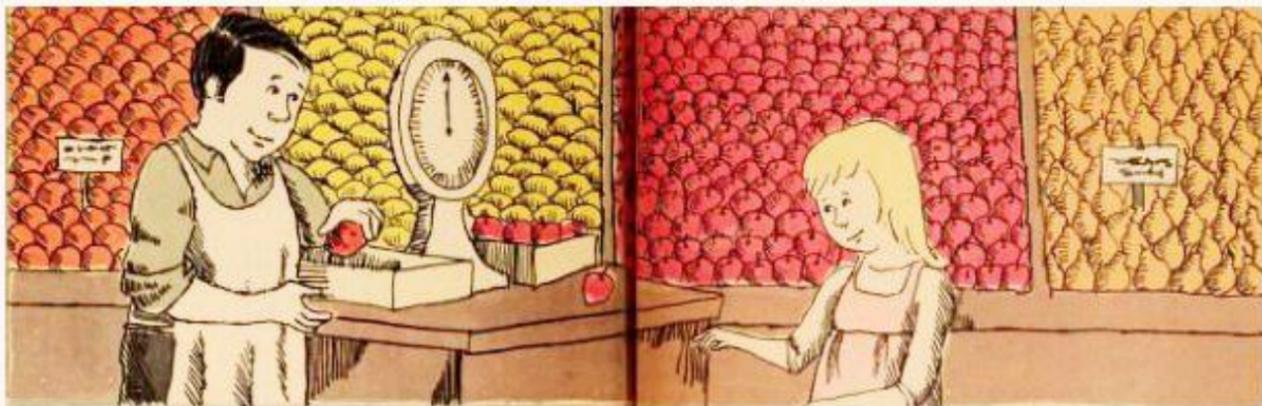
सूज़न सब्जी वाले की दुकान में गई.

"क्या आप मुझे दो पाउंड आलू देंगे?"

उसने कहा.

"यह लो," आदमी ने कहा.

"यह मेरे आखिरी आलू थे.

अब मेरे पास और आलू नहीं बचे हैं."

"आप और अधिक आलू कैसे मंगवाएंगे?"

सूज़न ने पूछा.

"मुझे परेशान मत करो,"
सब्जी वाले ने कहा.
"मैं बहुत व्यस्त हूँ."
सूज़न मां को आलू
देने के लिए घर भागी.
कुछ ही मिनटों में वो वापस स्टोर में आई.
सब्जी वाला एक बड़े कागज पर
कुछ लिख रहा था.
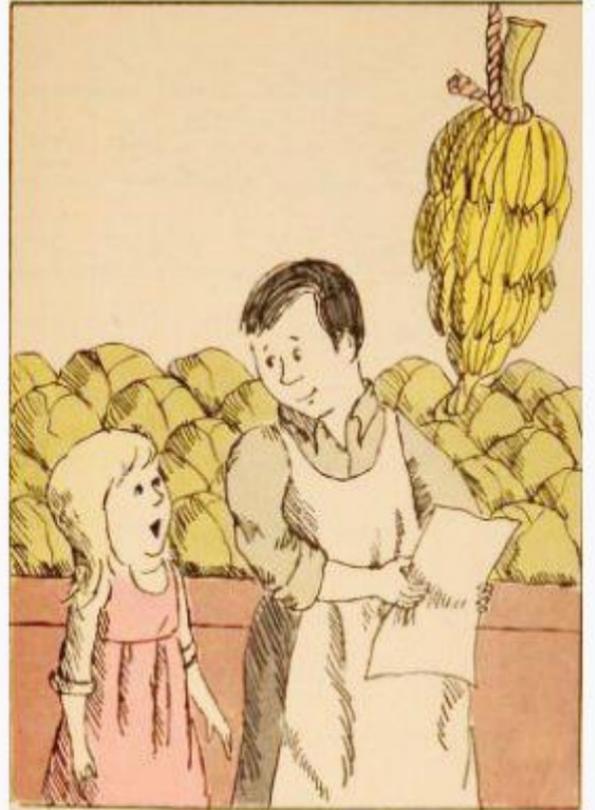
"अरे," सूज़न ने कहा.
"तुम फिर से?" सब्जी वाले ने कहा.
"क्या आप मुझे यह नहीं बताएंगे
कि आप आलू कहाँ से खरीदते हैं?"
सूज़न ने पूछा.
"ज़रूर बताऊंगा. करीब आओ. यह देखो,
क्या तुम्हें 'आलू' शब्द दिखाई दे रहा है?"

"आलू शब्द के आगे मैं उन बोरों की
संख्या लिख रहा हूं जिनकी
मुझे कल ज़रुरत होगी."
"आपको कितने बोरों की आवश्यकता होगी?"
सूज़न ने पूछा.
"दस बोरे. यानि पाँच सौ पाउंड आलू,"
सब्जी वाले ने कहा.

"वो तो बहुत सारे आलू होंगे,"
सूज़न ने कहा.
"इतने सारे आलू कहां से आएंगे?"

सब्जी वाले ने कहा, "गोदाम से.
वहीं से मेरी सारी सब्जियाँ आती हैं.
मैं अब उन्हें फोन करने जा रहा हूँ."
सूज़न ने सब्जी वाले को
फोन पर बातें करते हुए सुना.
उसने कहते हुए सुना, "पाँच सौ पाउंड."
"वो आलू ही होने चाहिए," सूज़न ने सोचा.
उसके बाद सब्जी वाले ने फोन रख दिया.

सूज़न ने उससे पूछा,
"गोदाम से सब्जियां कब आएंगी?"
"कल सुबह सात बजे ट्रक यहाँ आएगा.
तब तुम सो रही होगी,"
सब्जी वाले ने कहा.
"अरे नहीं," सूज़न ने कहा.
"मैं यहाँ देखने आऊंगी."
अगली सुबह सूज़न
सात बजे से पहले उठी.
वो सीधे दुकान पर पहुंची.

वहाँ ट्रक खड़ा था!
फुटपाथ पर बोरे और बक्से पड़े थे.

सूज़न ने कुछ बोरे दिखे
जिन पर ‘आलू’ शब्द लिखा था.
तभी सब्जी वाला दुकान से बाहर आया.
"अरे, तुम फिर से!" उसने कहा.
"आपके आलू गोदाम से आते हैं.
क्या मैं उस गोदाम को देखने जा
सकती हूँ?" सूज़न ने पूछा.
सब्जी वाले ने सूज़न की ओर देखा.
"ठीक है, यह संभव है.
पर उसके लिए तुम्हें
अपनी माँ से एक अनुमति पत्र
लिखवाकर लाना होगा," उसने कहा.
"कहाँ के लिए?" सूज़न ने पूछा.
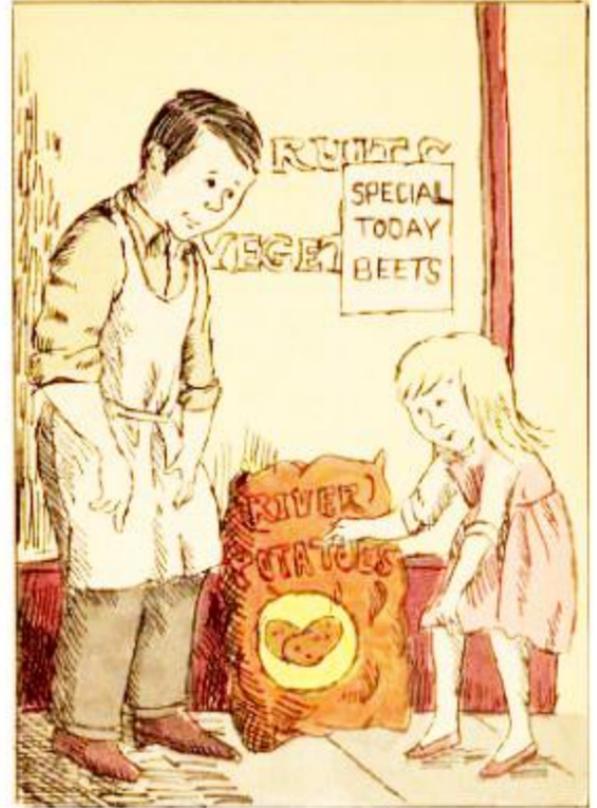
"अंदर आओ,"
सब्जी वाले ने कहा.
"मैं तुम्हें गोदाम का पता दूंगा."
सूज़न ने गोदाम का पता
अपनी मां को दे दिया.

"मुझे नहीं लगता कि वे तुम्हें
अकेले वहां पर जाने देंगे," माँ ने कहा.
"लेकिन वे तुम्हारी पूरी कक्षा को जाने दे सकते हैं."
उस दिन स्कूल में
सूज़न ने अपनी टीचर से पूछा,
"क्या हमारी क्लास, गोदाम देखने जा सकती है?"
"कौन सा गोदाम?" टीचर ने पूछा.
"देखिए," सूज़न ने कहा,
"मेरी माँ को आलुओं की ज़रूरत थी.
मैं उन्हें लेने के लिए स्टोर गई.
सब्जी वाले ने मुझे अपने
आखिरी दो पाउंड आलू दिए."

"फिर मैंने उससे पूछा कि
वो और आलू कहां से लाएगा?
उसने बताया कि एक ट्रक,
गोदाम से आलू लेकर आएगा.
आज सुबह मैंने दुकान के
सामने ट्रक देखा.
मैंने आलू के बोरे भी देखे.
अब मैं गोदाम देखने जाना चाहती हूं.
मेरी माँ ने पूछा है कि क्या हमारी
पूरी क्लास सब्ज़ियों का गोदाम
देखने जा सकती है?
यह रहा गोदाम का पता.
क्या हम उसे देखने जा सकते हैं?"
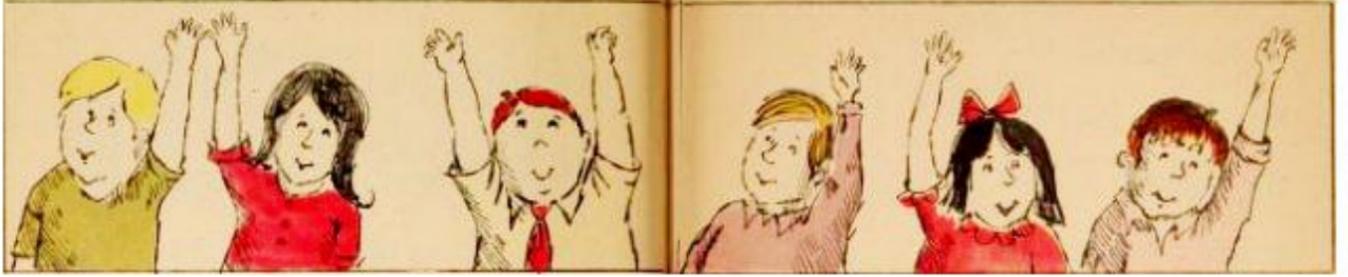
टीचर ने कक्षा से पूछा.
"तुमने अभी सूज़न की पूरी कहानी सुनी.
तुम में से कितने लोग
गोदाम का दौरा करना चाहोगे?"
सभी बच्चों ने अपना-अपना हाथ ऊपर उठाया.
फिर सूज़न की टीचर ने
गोदाम के मैनेजर को एक पत्र लिखा.

एक हफ्ते तक कुछ नहीं हुआ.
फिर पत्र का जवाब आया.
उसमें लिखा था, "आपकी कक्षा,
ग्यारह और बारह बजे के बीच किसी भी दिन
गोदाम को देखने के लिए आ सकती है."
नीचे "जे. ग्रीन" गोदाम मैनेजर के हस्ताक्षर थे.

अगले सोमवार को,
सूज़न की पूरी क्लास गोदाम
देखने के लिए रवाना हुई.
मिस्टर ग्रीन उनसे मिले.
उन्होंने बच्चों को आलू और अन्य
सब्जियों से लदे हुए ट्रक दिखाए.
"ट्रक कहाँ जाते हैं?"
उन बच्चों में से एक ने पूछा.
"मुझे पता है," सूज़न ने कहा.
"वे अलग-अलग दुकानों में जाते हैं."
"यह बिल्कुल सही है," मिस्टर ग्रीन ने
कहा. "ये ट्रक, शहर के सभी स्टोर में
सब्ज़ियां लेकर जाते हैं."
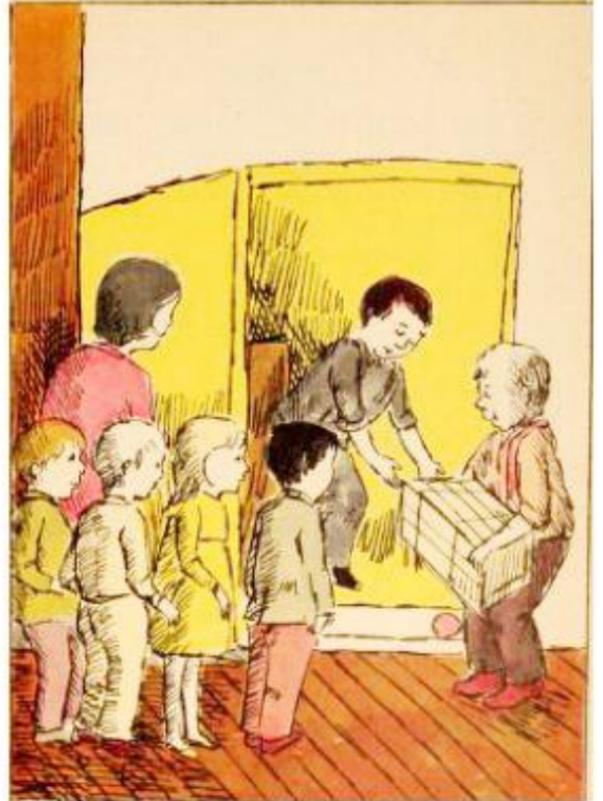
तब मिस्टर ग्रीन ने बताया कि
सब्ज़ियां रेल, ट्रकों और टेम्पो
द्वारा उनके गोदाम में आती हैं.
"देखो, कुछ ट्रक और टेम्पो अभी भी
आलू के बोरों से भरे हुए हैं," उन्होंने कहा.
"लेकिन आलू कहाँ से आते हैं?"
सूज़न ने पूछा.
"खेतों से," मिस्टर ग्रीन ने कहा.
"क्या मैं अपने बच्चों को आलू
के खेत दिखाने ले जा सकती हूँ?"
टीचर ने पूछा.

"ठीक है," मिस्टर ग्रीन ने कहा.
"आप मिस्टर बार्टो का आलू का खेत
ज़रूर देख सकती हैं.
वो शहर से बहुत दूर भी नहीं है."

अगले दिन स्कूल में, टीचर ने
मिस्टर बार्टो को पत्र लिखा.
लगभग एक हफ्ते बाद,
टीचर ने बच्चों से कहा,
"हम अगले मंगलवार को मिस्टर
बार्टो के आलू के खेत देखने जायेंगे."
मंगलवार को, पूरी क्लास
मिस्टर बार्टो का खेत देखने गई.
मिस्टर बार्टो उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे.
टीचर ने मिस्टर बार्टो से कहा,
"हम यह देखना चाहते हैं कि
आप आलू कैसे उगाते हैं."
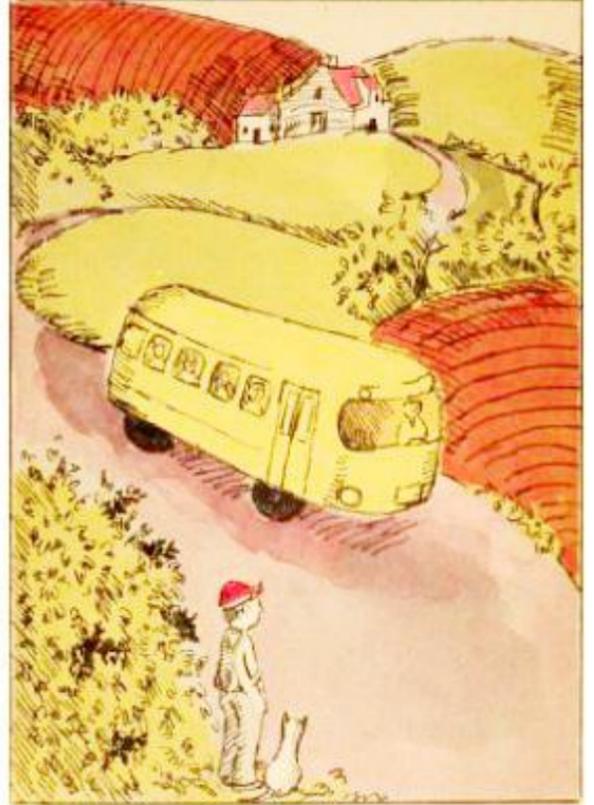
"आलू पहले से ही जमीन में हैं."
मिस्टर बार्टो ने कहा.
"आपका मतलब है कि हम बहुत देर
से आए हैं?" सूज़न ने पूछा.
"नहीं, लेकिन आलू के पौधे पहले से
ही बढ़ रहे हैं. मैंने उन्हें मई में
लगाया था. और अब जून है."
"क्या आप उन्हें बीजों से रोपित
करते हैं?" टीचर ने पूछा.
"नहीं," मिस्टर बार्टो ने कहा.
"हम छोटे-छोटे आलू बोते हैं.
हम उन्हें 'बीज-आलू' कहते हैं."

मिस्टर बार्टो ने अपनी जेब से
एक बीज-आलू निकाला.
उन्होंने आलू को आधे में काटा.
फिर उसे दुबारा आधे में काटा.
अब उसके चार टुकड़े हो गए थे.
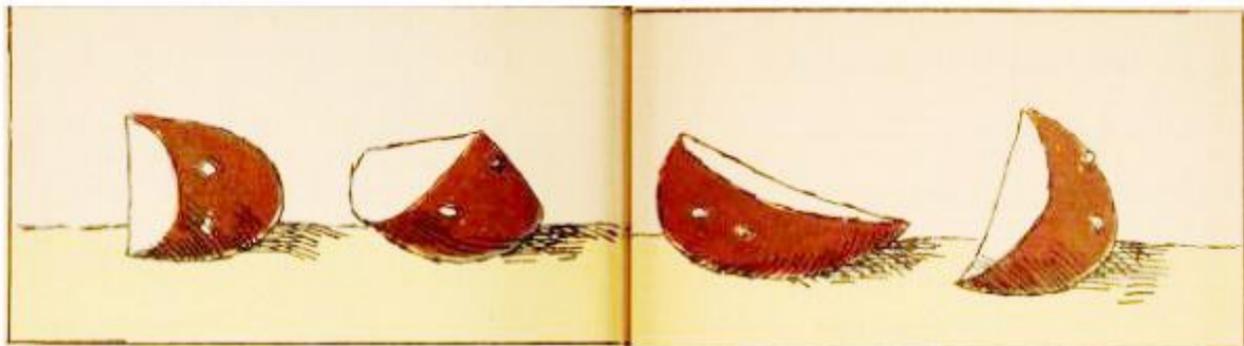
"हम आलू के इन छोटे-छोटे
टुकड़ों को बोते हैं.
प्रत्येक टुकड़े में कम-से-कम
एक या दो आँखें होनी चाहिए.
आँखें, आलू के वे स्थान हैं
जहाँ कलियाँ होती हैं."

इन कलियों में से
नए आलू के पौधे उगते हैं.”
"आप उन्हें कैसे बोते हैं?"
लड़कों में से एक ने पूछा.
"क्या आप चलते-चलते
उन्हें जमीन पर गिरा देते हैं?"

"अरे नहीं." मिस्टर बार्टो ने कहा.
"मेरा खेत बहुत बड़ा है इसलिए मैं वो
नहीं कर सकता. मेरे पास एक मशीन है
जो आलू बोती है."
वो मशीन दिखाने के लिए बच्चों को
खलिहान में ले गए.
"यह मशीन एक बार में
आलू की दो पंक्तियाँ बनाती है."
मिस्टर बार्टो ने उन्हें
सामने के दो नुकीले पहिए दिखाए.
"ये पहिए, पंक्तियों को खोदने
का काम करते हैं," उन्होंने कहा.

फिर उन्होंने बच्चों को मशीन के पीछे
स्थित दो खाली लोहे के बक्से दिखाए.
"प्रत्येक बक्से के निचले भाग
में दांतों वाला एक पहिया होता है.
जैसे ही पहिया घूमता है,
उसके दांत आलू उठा लेते हैं.
फिर वे उन्हें एक-एक करके
जमीन पर गिराते हैं.
और यहां दो और नुकीले पहिए हैं
जो आलू को मिट्टी से ढंकते हैं,"
उन्होंने कहा.
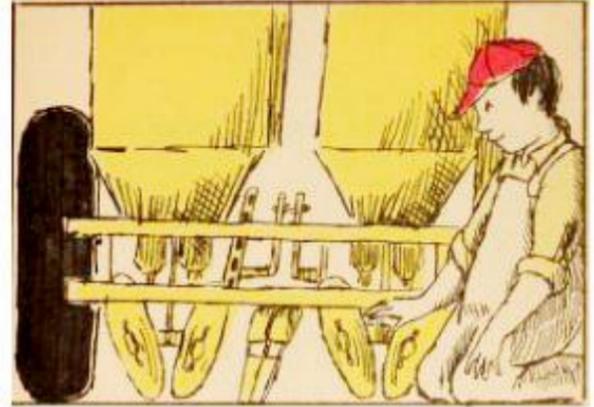
"क्या तुम देखना चाहोगे कि
आलू के पौधे अब कैसे दिखते हैं?"
मिस्टर बार्टो ने पूछा.
"चलो, फिर मेरे पीछे आओ."

पूरा क्लास मिस्टर बार्टो के
पीछे-पीछे उनके खेत में गया.
हर तरफ सिर्फ हरे पौधों की
क्यारियां दिखाई दे रही थीं.

पौधों पर सफेद फूल थे.
"मुझे पौधे तो दिखाई दे रहे हैं,"
सूज़न ने कहा.
"लेकिन आलू कहाँ हैं?"

मिस्टर बार्टो ने एक फावड़ा लिया
और एक पौधे के नीचे खोदा.
फिर उन्होंने पूरे पौधे को
ज़मीन में से बाहर निकाला.
"चलो, अब आलू ढूंढो,"
उन्होंने कहा.
सभी ने देखा.
सूज़न ने भी उन्हें देखा.
वे छोटे थे. पर आलू थे.

आलू, पौधे के उस हिस्से पर थे

जो जमीन के नीचे उग रहा था.

"वे कितने छोटे हैं!"

सूज़न ने कहा.

"वे पूरी गर्मियों भर बड़े होंगे,"

मिस्टर बार्टो ने कहा.

"तुम चाहो तो आलू के

बीज भी देख सकते हो

जो हमने लगाए थे."

"आलू तैयार होने पर
उन्हें कौन खोदता है?"
लड़कों में से एक ने पूछा.
"सितंबर में एक बड़ी मशीन उन्हें
खोदेगी," मिस्टर बार्टो ने कहा.

"क्या हम फिर से आ सकते हैं आलू की खुदाई
का काम देखने के लिए?" टीचर ने पूछा.
"तब मैं बहुत व्यस्त होऊंगा,"
मिस्टर बार्टो ने कहा.
"लेकिन आप लोग आकर देख सकते हैं.
जब खुदाई होगी तब मैं आपको खबर करूंगा."

घर के रास्ते पर, सूज़न ने अपनी
टीचर से पूछा, "आलू के उन टुकड़ों से
नए पौधे कैसे बाहर निकलते हैं?"
"मिस्टर बार्टो ने तुम्हें बताया,"
टीचर ने कहा. "आलू की आँखों में
कलियाँ होती हैं जो नए पौधों में
विकसित हो सकती हैं. घर पहुँचने के
बाद तुम ने माँ के लिए जो आलू खरीदे
हैं उन्हें गौर से देखना."

जब सूज़न घर पहुंची,
तो वह रसोई में भाग कर गई.
उसने आलू के बैग में झाँका.

"देखो यह आलू तो
बिना बोए ही बढ़ रहा है,"
उसने अपनी माँ से कहा.

"यह आलू अपनी आंख से बढ़ रहा है."
फिर उसने अपनी माँ से आलू को चार
टुकड़ों में काटने को कहा.
"ये वो टुकड़े हैं," उसने कहा,
"जिन्हें किसान ने बोया था."
सितम्बर में सूज़न वापिस स्कूल गई.
वो बहुत खुश थी कि उसकी टीचर
बदली नहीं थी.
कक्षा के अधिकांश बच्चे भी वही थे.
सूज़न ने पूछा, "हम मिस्टर बार्टो को
देखने कब जा सकते हैं?"

"मिस्टर बार्टो ने मुझे एक एक नोट भेजा है. हम अगले बुधवार को उनके खेत में जा सकते हैं," टीचर ने कहा.

बुधवार को, पूरी कक्षा खेत में वापस गई. मैदान के बीच में एक बड़ा ट्रक था. ट्रक के बगल में एक ट्रैक्टर था जो एक विशाल मशीन को खींच रहा था.
एक बच्चे ने कहा, "यह आलू के पौधे तो मरे हुए दिखते हैं!"
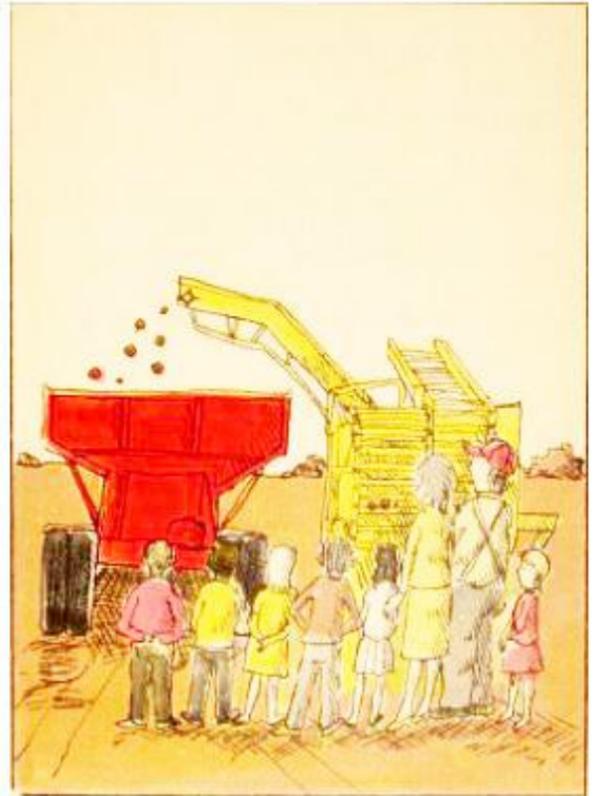
"ये सही है," टीचर ने कहा.
"वे सभी भूरे और मरे दिख रहे हैं.
बच्चे यह जानना चाहते हैं कि
आलू के पौधे मृत क्यों दिख रहे हैं,"
उन्होंने मिस्टर बार्टो से पूछा.
"खोदते समय आलुओं के पौधों को
ऐसा ही मरा हुआ दिखना चाहिए,"
मिस्टर बार्टो ने कहा.
"जब ऊपर के पौधे मरने लगते हैं,
तब हमें पता चलता है कि जमीन के
नीचे आलू तैयार हैं."

"अब एक तरफ हटो."
टीचर और पूरा क्लास मशीनों
से दूर हट गए.

मिस्टर बार्टो ने ट्रैक्टर को शुरू किया
जो उस विशाल मशीन को खींचता.
मिस्टर बार्टो की पत्नी ने दूसरे लाल
ट्रक को शुरू किया जो मशीन के
साथ-साथ चलने वाला था. विशाल
मशीन ने एक समय में आलू की दो
पंक्तियों को खोदा. आलू एक चलती
चेन बेल्ट पर से गिरने लगे. मिट्टी और
मृत बेलें जमीन पर गिरने लगीं.
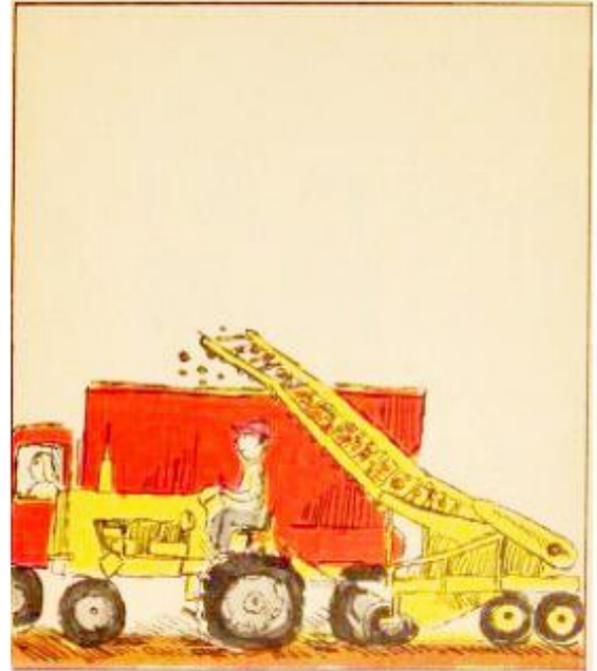
लेकिन आलू बेल्ट पर ही रहे.
फिर वे ट्रक में जाकर गिरे.

कुछ मिनटों के बाद,
मिसेज़ बार्टो ने ट्रक को रोक दिया.
फिर मिस्टर बार्टो ट्रैक्टर से नीचे उतरे.
"यहाँ आकर," उन्होंने सूज़न से कहा,
"एक पौधा खोदो."
सूज़न ने आलू के पौधे के चारों ओर
खोदा. मिस्टर बार्टो ने उसकी मदद की.

जब उन्होंने अपना काम खत्म किया
तब जमीन पर दस बड़े आलू पड़े थे.

वसंत में, पूरे क्लास ने

छोटे-छोटे आलू देखे थे.

अब वे बहुत बड़े हो गए थे.

मिस्टर बार्टो ने टीचर से कहा.

"मेरा ट्रक भर गया है.

चलो, गोदाम तक मेरे पीछे-पीछे आओ."

"एक और गोदाम!" सूज़न ने कहा.

किसान ट्रक में बैठा.

बच्चे बस में चढ़े.

फिर वे एक बड़ी इमारत में गए.

"बच्चों को अंदर ले आओ,"

मिस्टर बार्टो ने टीचर से कहा.
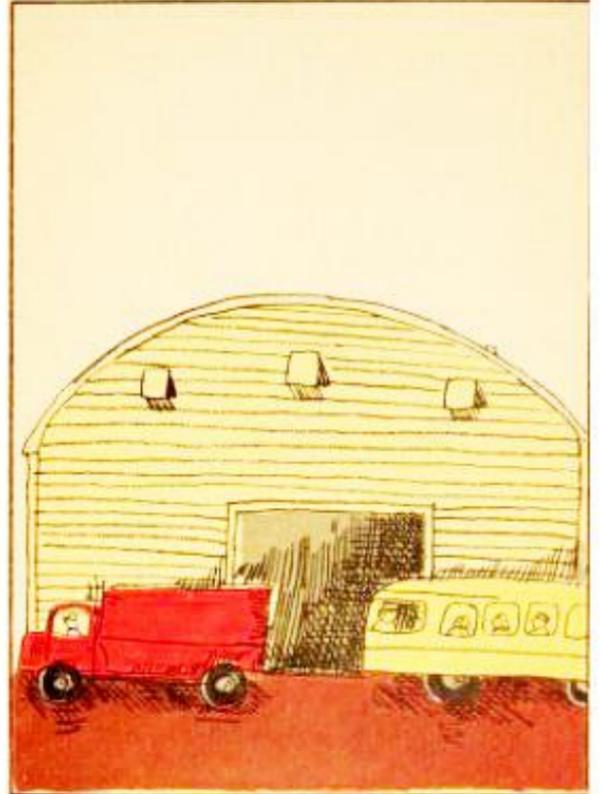
उन्होंने ट्रक के बगल की दीवार में
एक छोटा सा दरवाजा खुला देखा.
आलू दरवाजे से एक चलती
बेल्ट पर गिरना शुरू हुए.
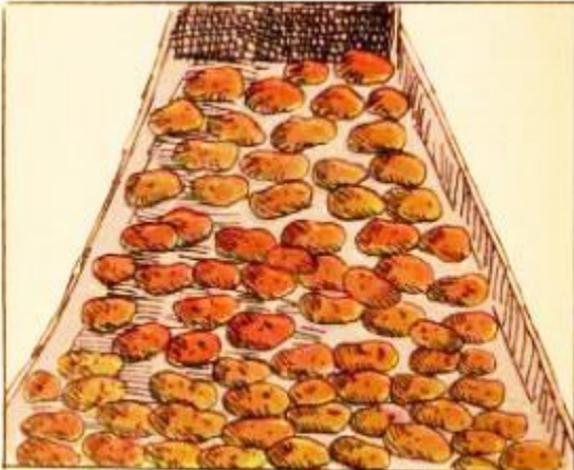
फिर आलू एक मशीन में से गुज़रे
जिसने उन्हें धोया और सुखाया.

फिर आलू एक दूसरी बेल्ट पर गिरे.

अंत में वे बड़े-बड़े बोरों में जाकर गिरे.

"इन बोरों का क्या होगा?"

टीचर ने पूछा.

बोरों के पास वाले एक आदमी ने कहा,

"वे बोरे एक ट्रक में लोड होंगे."

"मुझे पता है कि वे फिर वे कहाँ जाएंगे,"

सूज़न ने कहा.

"वे यहाँ से दूसरे गोदाम में जाएंगे.
फिर वे किसी अन्य ट्रक पर
लदकर दुकानों पर जाएंगे.
इस तरह दुकानों तक आलू
पहुँचते हैं!"

समाप्त